सी-डैक
CDAC

सूत्रपात

वार्षिक
पत्रिका
२०१८

प्रगत संगणन विकास केन्द्र, मोहाली

सुविचार

भगवान एक है, लेकिन उसके कई रूप हैं। वो सभी का निर्माणकर्ता है और वो खुद मनुष्य का रूप लेता है।

– श्री गुरु नानक देव

यदि आप दूसरों की मदद कर सकते हैं, तो अवश्य करें यदि नहीं कर सकते हैं तो कम से कम उन्हें नुकसान नही पहुचाइए।

– दलाई लामा

मेहनत करने से दरिद्रता नहीं रहती, धर्म करने से पाप नहीं रहता, मौन रहने से कलह नहीं होता।

– चाणक्य

हमारी ताकत और स्थिरता के लिए हमारे सामने जो जरूरी काम हैं उनमे लोगों में एकता और एकजुटता स्थापित करने से बढ़ कर कोई काम नहीं है।

– लाल बहादुर शाश्त्री

कृत्रिम सुख की बजाये ठोस उपलब्धियों के पीछे समर्पित रहिये।

– अब्दुल कलाम

साख बनाने में बीस साल लगते हैं और उसे गंवाने में बस पांच मिनट, अगर आप इस बारे में सोचेंगे तो आप चीजें अलग तरह से करेंगे।

– वॉरेन बफे

मेरे भूत, वर्तमान और भविष्य के बीच एक आम कारक है: रिश्ते और विश्वास। यही हमारे विकास की नीव हैं।

– धीरूभाई अंबानी

अगर आप सोचते हैं कि आप कर सकते हैं तो आप कर सकते हैं। अगर आप सोचते हैं कि आप नहीं कर सकते हैं तो आप नहीं कर सकते हैं। किसी भी तरह से आप सही हैं।

– शिव खेड़ा

गलतियां हमेशा क्षमा की जा सकती हैं, यदि आपके पास उन्हें स्वीकारने का साहस हो।

– ब्रूस ली

सूत्रपात

वार्षिक गृह पत्रिका-(सातवां अंक)

इस अंक में

निदेशक की कलम से

विनोद कुमार एम

वरिष्ठ निदेशक एवं केन्द्र प्रमुख

(राजभाषा कार्यान्वयन समिति)

सम्पादकीय

शैलेश सिंह

सम्पादक मण्डल

सुषमा कौशल

सहयोग

प्रीतिका

निःशुल्क वितरण के लिए

नोटः प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए लेखक एवं सूत्रपात सम्पादक मण्डल की पूर्व अनुमति लेना आवश्यक है। सूत्रपात में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण लेखक के अपने हैं। सम्पादक मण्डल का सबसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

गृह पत्रिका (सातवां अंक)

अनुक्रम

अंक (क)

संदेश निदेशक की कलम से

सम्पादकीय

अंक (ख)	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
01	ध्यान	3
02	सूक्ष्म शरीर और भौतिक शरीर के दोष	5
03	माटी कहे कुम्हार से	7
04	ग्रीन हाउस जलवायु नियंत्रण प्रणाली	8
05	5 जी,वायरलेस तकनीक की अगली पीढ़ी	10
06	कार्य प्रारंभ करने का सही समय	13
07	इंसानियत ही धर्म है	15
08	बड़ो के सम्मान में भूल न करें	16
09	विश्वास और अंध विश्वास	17
10	सौ में सत्तर आदमी	19
11	कैसा हो स्कूल हमारा (प्रेरक गीत)	20
12	तन-मन व मस्तिष्क को शांत एवं प्रसन्नचित्त रखें	21
13	प्रदूषण के प्रकार	24
14	मोबाइल का दूरूपयोग	28
15	एक नया पार्क	30
16	जीवन की कोमल नौका	32
17	कर्मों का फल आज नही तो कल भोगना ही पड़ेगा	33

अंक (ख)	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
18	प्यारी माँ	35
19	महिला सशक्तिकरण	37
20	पॉलिथीन का नुकसान	39
21	ओलम्पियाड परीक्षाओं का महत्व	41
22	नारी	43
23	प्रशासनिक शब्दाबली	44

निदेशक की कलम से

विगत कई वर्षों से, सी-डैक मोहाली, अपनी वार्षिक हिन्दी पत्रिका सूत्रपात का प्रकाशन करता रहा है। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी सूत्रपात का नवीन संस्करण प्रस्तुत किया जा रहा है। सूत्रपात में सी-डैक मोहाली परिवार के सदस्यों का अभिन्न सहयोग रहा है।

पत्रिका में कहानियों, लेखों, सस्मरणों, कवितायों इत्यांदि का सम्पादन किया गया है। अंग्रेजी भाषा के बढ़ते प्रभाव के बीच हिन्दी भाषा के प्रचार और प्रसार के लिए यह हमारा एक सार्थक प्रयास है।

मैं इस पत्रिका के लेखन,सम्पादन और प्रकाशन में अपना बहुमूल्य योगदान देने वाले सभी कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ।

शुभ कामनाओं के साथ।

विनोद कुमार एम
वरिष्ठ निदेशक एवं केन्द्र प्रमुख

संपादकीय

सी-डैक, मोहाली द्वारा विगत कई वर्षों से हिन्दी की वार्षिक पत्रिका सूत्रपात का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका के माध्यम से कार्यालय के सदस्य अपनी भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति भी करते हैं और राजभाषा हिन्दी के प्रचार व प्रसार में अपना सहयोग भी करते हैं। प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी सूत्रपात में सी-डैक, मोहाली के अधिकारियों , कर्मचारियों और विशेष कर्मचारी वर्ग के लेखों, कविताओं, कथाओं, ब्यंगो, तकनीकी लेखों इत्यादि का संकलन किया गया है।

मैं इस पत्रिका के लेखन , संपादन और प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि सूत्रपात का यह वर्तमान अंक आपको अवश्य पसन्द आयेगा।

शुभकामनाओं सहित

शैलेश सिंह
वरिष्ठ अभियंता

ध्यान

ध्यान हमारे तन, मन और आत्मा के बीच लयात्मक सम्बन्ध बनाता है। ध्यान का नियमित अभ्यास करने से आत्मिक शक्ति बढ़ती है इससे मानसिक शांति की अनुभूती होती है। मानसिक शांति से शरीर स्वस्थ रहता है। ध्यान के द्वारा हम उर्जा को केंद्रित करके मन और शरीर में शक्ति का संचार कर सकते हैं। इस से व्यक्ति में निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है। हमारा मन और मस्तिष्क पूर्णत शांत और प्रसन्नचित अनुभव करता है ।

ध्यान के कई लाभ भी हैं

१ मानसिक लाभ- आज के समय में शोर और प्रदूषण से व्यक्ति तनाव और मानसिक थकान अनुभव करता है जिस कारण उसको किसी भी काम को करने में मन नही लगता। ध्यान करने से तनाव के दुष्प्रभाव से बचा जा सकता है। मस्तिष्क में नई उर्जा का आगमन होता है जीवन में आने वाली समस्याएं और चिताएं कम हो जाती हैं। शरीर की प्रत्येक कोशिका के भीतर प्राण शक्ति का संचार होता है। इससे रक्तचाप नियंत्रित होता है और बीमारी से लड़ने की क्षमता बढ़ती है जिससे हम कई छोटी बड़ी बिमारियों का सामना कर सकते हैं जैसे कि सिरदर्द , शरीर में कमजोरी का होना आदि। जब भी हम ध्यान लगाते हैं, तब हमारे मन में नई शक्ति का संचार होता है।

२. आध्यात्मिक लाभः जब भी कोई भी व्यक्ति ध्यान करने लगता है उसका मन शांत होने लगता है अपनी भावनाओं और विचारो पर नियंत्रण होने लगता है। ध्यान करने से क्रोध,लोभ,मद आदि विकार समाप्त हो जाते हैं। ध्यान एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम आस पास की चल रही प्रक्रियाओं को समझ पाते हैं। ये ईश्वर के समीप ले जाने का मार्ग है। ध्यान करने वाला व्यक्ति को कितनी भी परेशानियां आये वह कभी भी उदास नही होता बल्कि उस व्यक्ति का मनोबल और भी बढ़ जाता है। ध्यान मस्तिष्क को केन्द्रित करके कुशाग्र बनाता है जोकि हमें विश्राम प्रदान करता है। ध्यान करने के लिए किसी भी धर्म का आवश्यकता नहीं है। ये आपको जागृत एंव

आपकी मनोवृत्ति को बढ़ाता है।

पांच से दस मिनट का ध्यान आपके मन को शांत और मस्तिष्क की गति को तेज कर देता है यदि आप इसे दिनचर्या का हिस्सा बना लेते हैं तो आपके काम अपने आप होते जाते हैं। मन में कोई भी इच्छा नही रहती । आप का मन वर्तमान की ओर चलना शुरु हो जाता है। ध्यान करने से मन में जो भय और चिंता होती है वह दूर होने लगती है कार्य और व्यवहार में सुधार होने लगता है क्षमता बढ़ने से विवेक जागृत होता है। खुद तक पहुंचने का एक मात्र मार्ग ध्यान ही है।

सुषमा कौशल
प्रोजैक्ट सर्विस सपोर्ट

सूक्ष्म शरीर और भौतिक शरीर के दोष

हमारा सूक्ष्म शरीर आंशिक रूप से वायु और अग्नि तत्व से बना होता है इसे भौतिक शरीर का अविनाशी रूप कहा जाता है ऐसी मान्यता है कि मृत्यु के बाद भौतिक शरीर तो खत्म हो जाता है परंतु सूक्ष्म शरीर का अस्तित्व बना रहता है सूक्ष्म शरीर में भौतिक शरीर की तरह सभी अंगों का समावेश होता है साथ में कुछ ऊर्जा केंद्रों की संरचना होती है जिन्हें चक्र कहा जाता है।

ये चक्र मूलरूप से भौतिक शरीर के अंगों में ऊर्जा का प्रवाह करते हैं और इन भौतिक अंगों के कार्यों को संचालित करते हैं यदि इन चक्रों में कोई दोष आ जाता है तो इनसे सम्बन्धित शारीरिक अंगों में भी दोष आ जाता है और हमें उस अंग से जुड़ी कोई बीमारी हो जाती है हमारे सूक्ष्म शरीर में प्रमुख रूप से सात चक्र होते है जोकि हमारे पूरे शरीर का संचालन करते हैं।

सबसे पहला चक्र, जिसे सहस्र चक्र कहते हैं, वो हमारे सिर के ऊपर मध्य भाग में होता है सहस्र चक्र हमारे शरीर का मुख्य ऊर्जा द्वारा है जिससे हमारे शरीर में ऊर्जा का प्रवेश होता है सहस्र चक्र मुख्य रूप से मस्तिष्क, शीर्षग्रंथि और सामान्य रूप से पूरे शरीर को ऊर्जा देता है अगर सहस्र चक्र में खराबी आ जाये तो हमें मस्तिष्क या शीर्षग्रंथि सम्बन्धित कोई बीमारी हो जाती है।

आज्ञा चक्र हमारी आँखों की दोनों भौहों के बीच स्थित होता है आज्ञा चक्र हमारी पीयूष ग्रन्थि, आँखों, इंडोक्राइन ग्रंथियां और मस्त्रिस्क के कुछ भाग को नियन्त्रित करता है इसमें दोष आने से हमें आँखों या मस्तिष्क सम्बन्धित कोई समस्या हो जाती है यह हमारे श्वशन तंत्र को भी प्रभावित करता है।

विशुद्धि चक्र हमारे गले के मध्य स्थित होता है यह हमारी थाइराइड ग्रंथि, श्वशन तन्त्र, स्वरतंत्र और लसीका तंत्र को नियन्त्रित करता है।

अनाहत चक्र हमारे हृदय क्षेत्र में स्थित होता है यह हमारे हृदय, थाइमस ग्रंथि और रक्त संचरण तन्त्र को संचालित करता है इसमें दोष आने पर हमें हृदय रोग हो

जाता है। मणिपुर चक्र मध्य सीने में पसली की हड्डी के नीचे स्थित होता है यह हमारे पेट, अग्न्याशय और यकृत को को नियन्त्रित करता है और इनके अच्छे और बुरे स्वास्थ्य के लिये जिम्मेदार होता है यह हमारी आँतों, फेफडों के कार्यों और पूरे शरीर के रक्त प्रवाह को संचालित करता है यह हमारे शरीर के तापमान नियंत्रण करने की प्रणाली को भी संचालित करता है यह पाचनतंत्र को भी प्रभावित करता है।

मूलाधार चक्र हमारे मेरुदंड के आखिरी छोर पर स्थित होता है यह पेड़ की जड़ की तरह काम करता है यह हमारे पूरे शरीर को ऊर्जा देता है और हमारे सामान्य स्वास्थ्य को निर्धारित करता है यह हमारे अस्थिपंजर, त्वचा, शारीरिक ऊर्जा, मांसपेशीय संरचना को निर्धारित करता है।

स्वाधिष्ठान चक्र शरीर के जघन क्षेत्र में स्थित होता है यह यौन अंगों और मूत्रांगो को संचालित करता है यह चक्र आज्ञा चक्र, विशुद्धी चक्र और मूलाधार चक्र से अत्यधिक प्रभावित होता है इस चक्र में विकार आने पर इंसान को यौन अंगों या मूत्रांगो सम्बन्धित कोई बीमारी हो जाती है।

शैलेश सिंह
वरिष्ठ अभियंता

सूक्ष्म शरीर और ऊर्जा चक्र तंत्र

माटी कहे कुम्हार से

एक कुम्हार माटी से चिलम बनाने जा रहा था। मिट्टी को चिलम का आकार देने के बाद उसने कुछ सोचा और चिलम को बिगाड़कर फिर मिट्टी का लौंदा बना दिया।

इस पर माटी ने पूछा अरे कुम्हार, तुमने इतनी अच्छी तो चिलम बनाई थी, फिर बिगाड़ क्यों दिया ?

कुम्हार ने कहा अरी माटी, पहले मैं चिलम बनाने की सोच रहा था, किंतु मेरी मति बदल गई, और अब सोच रहा हूँ कि मैं तुमसे सुराही बनाऊंगा।

यह सुनकर माटी बोली-रे कुम्हार, तेरी तो मती ही बदली, लेकिन मेरी तो नियति ही बदल गई, चिलम बनती तो खुद भी जलती, औरों को भी जलाती। अब सुराही बनूंगी तो स्वंय भी शीतल रहूंगी और दूसरों को भी शीतल रखूंगी।

यदि जीवन में हम सभी सही समय पर सही फैसला ले और सकारात्मक विचार अपना ले तो हम स्वंय भी खुश रहेंगे और दूसरों को भी खुशियां दे सकेंगे।

राजीव कुमार
प्रोजैक्ट टेक्नीशियन

ग्रीन हाउस जलवायु नियंत्रण प्रणाली

जलवायु परिवर्तन, दुनिया में मौजूद सबसे बड़े पर्यावरणीय खतरों में से एक है। यह खाद्य उत्पादन, निरंतर जल आपूर्ति, वनों की जैव विविधता और अन्य प्राकृतिक परिस्थितिक तंत्र, मानव स्वास्थ्य और बस्तियों को प्रभावित करता है। वैश्विक अध्ययन के मुताबिक भारत उन देशों में से एक है जिसे जलवायु परिवर्तन के कारण खाद्य असुरक्षा का सबसे बड़ा खतरा है। आज देश के सामने आने वाली मुख्य समस्या खाद्य उत्पादन पर जलवायु परिवर्तन का है। भारत और विदेशों में प्रमुख कृषि अनुसंधान और विश्वविद्यालय जलवायु के प्रभाव का अध्ययन करने के लिये पौधों पर विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक अध्ययनों के लिये जलवायु नियंत्रित कक्षों का उपयोग कर रहे हैं।

सी-डैक मोहाली भी ग्रीनहाउस के लिए स्वदेशी जलवायु नियंत्रण प्रणाली प्रौद्योगिकी विकसित करने में सफल रहा है 2011 में भारत सरकार द्वारा वित्त पोषित कृषि अनुसंधान में उपयोग किए जाने वाले ग्रीनहाउस के लिए जलवायु नियंत्रण प्रणाली के डिजाइन और विकास के तहत निम्नलिखित प्रणाली विकसित की गई और उसे सफलता पूर्वक प्रदर्शित किया गया:-

- अनुसंधान (शोध) ग्रीनहाउस एवं जलवायु नियंत्रण प्रणाली।
- पैरामीटर को नियंत्रित करने, निगरानी करने और रिपोर्ट करने के लिए उपयोगकर्ता के अनुकूल इंटरफेस।

सी-डैक मोहाली ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के लिए एक नियंत्रित पर्यावरण (आईएआरआई) प्रणाली की सुविधा विकसित की है जिसमें ग्रीनहाउस कक्ष भी शामिल है भारत सरकार के डिजिटल इंडिया 8 के फ्लैगशिप प्रोग्राम के तहत, सोलन,लुधियाना और करनाल में तीन जलवायु नियंत्रित ग्रीनहाउस स्थापित किये हैं।

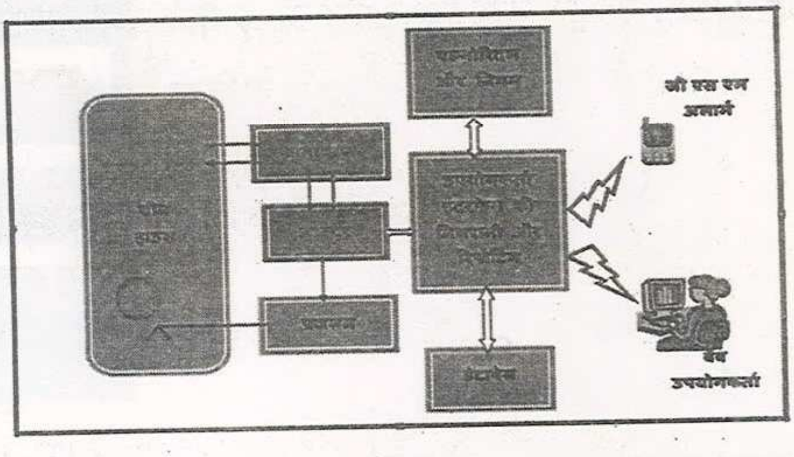

जलवायु नियंत्रण प्रणाली के अतर्गत हैं

१) ग्रीनहाउस में इनडोर पैरामीटर की निगरानी और नियंत्रण

२) जलवायु नियंत्रण स्थान के लिए प्रोग्रामिंग कार्यक्रम

३) नापे हुए डेटा का ग्राफिकल विश्लेषण

प्रणाली का ढांचाः-

जलवायु नियंत्रण प्रणाली में पर्यवेक्षी और नियंत्रण इकाई पीसी,नियंत्रण रिले इकाई और सेंसर नोड भी शामिल हैं। ये पीसी बस के माध्यम से अन्य इकाइयों के साथ जुड़ा हुआ है।

सभी नोड्स ग्राफिक विश्लेषण और भंडारण के लिए पर्यवेक्षी पीसी के लिए सेंसर नोड्स के द्वारा इनडोर तापमान और सापेक्ष आर्द्रता के स्तर पी आर प्रकाश के स्तर और सीओ के स्तर की निगरानी करते हैं। वास्तविक जलवायु स्थितियों की निगरानी करने के लिए रणनीतिक स्थानों पर एकाधि तापमान और सापेक्ष आर्द्रता के सेंसर लगाए जाते हैं। बाहरी तापमान और नमी की निगरानी भी एक विकल्प के रुप में प्रदान की जा सकती है। निष्पादन इकाइयों का नियंत्रण रिले इकाइयों द्वारा किया जाता है। सिस्टम में व्यक्तिगत निष्पादन इकाइयों के लिए स्वचालित या मेनुअल नियंत्रण निर्धारित करने के लिए पीसी पर मेनुअल सिस्टम कंट्रोल पैनल है।

सॉफ्टवेयर प्रणाली

पीसी सॉफ्वेयर, निर्धारित समय पर सभी इनडोर और आउटडोर पैरामीटर का प्रत्यक्ष माप प्रदान करता है, उसके बाद एल्गोरिदम दैनिक कार्यक्रमों के अनुसार नियंत्रण कार्यों की गणना करता है। पीसी सॉफ्टवेयर ग्रीनहाउस जलवायु के सभी पैरामीटर रीयलटाइम में स्टोर और विजुअलइज करने की अनुमति देता है। यह सॉफ्टवेयर उपयोगकर्ता को नियंत्रित किए जा रहे पैरामीटर को समायोजित करने और रीयलटाइम में टेक्स्ट मोड में सभी आपातकालीन और अलार्म संदेशों के साथ पूर्ण जानकारी प्रदान करता है। उपयोगकर्ता जलवायु कार्य, नियंत्रण की रणनीति, नियंत्रण पैरामीटर , सभी सेंसर और मापा मूल्यों के लिए अंशाकन डेटा नियुक्त करता है।

सोनिया दोसांझ
संयुक्त निदेशक

5 जी, वायरलेस तकनीक की अगली पीढ़ी

हर दशक (दस वर्षो), वायरलेस उद्योग एक नए सेलुलर संचार मानक तकनीक का प्रक्षेपण करता है जोकि डाटा को और अधिक तेज़ी से प्रेषित करता है विकास का अगला दौर 5 जी का है रेडियो तरंगों पर डेटा एन्कोडिंग और संचारण करने के लिए मानको की यह पांचवी बड़ी पीढ़ी है।

पहली पीढ़ी को 1-जी कहा जाता है यह आवाज संचारित करने के लिए पूरी तरह से एनालॉग प्रणाली थी। इसके विपरीत, 2 जी फोन आवाज और डाटा को डिजिटल रुप से प्रेषित करता है। बाद की पीढ़ियों वर्ष 2000 में 3 जी और वर्ष 2010 में 4 जी ने तकनीकी सुधार किये जोकि प्रति सेकंड 200 किलोबिट से प्रति सेकंड में सेकड़ो मेगाबिट तक का डाटा संचारित करते हैं वर्ष 2020 तक 5-जी की तकनीक से प्रति सेकंड 1 गिगाबिट और शायद उस से भी अधिक डाटा को संचारित करने की उम्मीद है।वायरलेस पीढ़ी ने हाल ही में कुछ वर्षों में सुधार करके इससे कम समय में अधिक डाटा को भेजा और प्राप्त किया जा सकता है।

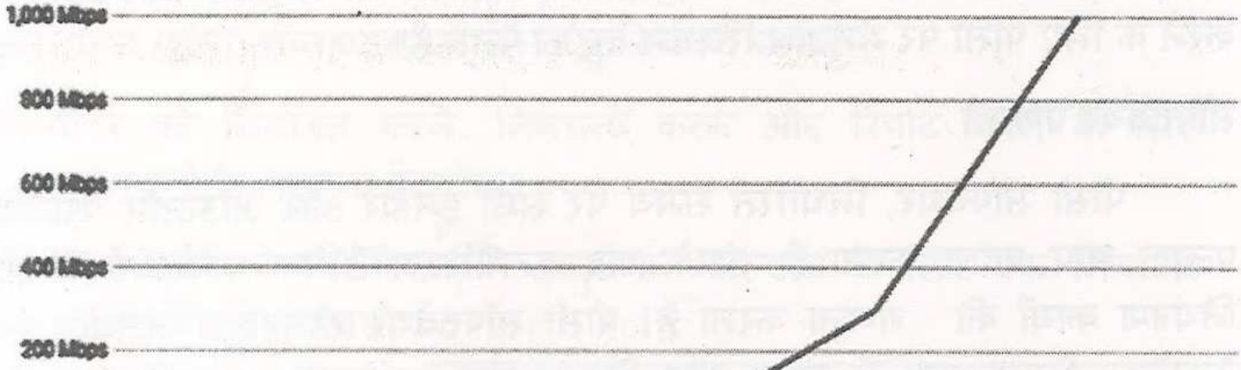

Chart: The Conversation, CC-BY-ND • Source: Based on data from eecommunity.blogspot.sg, lifewire.com and 5g.co.uk • Get the data

सक्षम होने के कारण अधिक डाटा को भेजने और प्राप्त करने के लिए संवर्धित और आभासी वास्तविकता प्रणालियों के साथ -साथ स्वचालन के लिए भी नए अवसर प्रदान किये जाएंगे।

उदाहरण के लिए, सेल्फ ड्राइविंग कारे एक दूसरे के साथ कम्यूनकेट कर सकती हैं,सड़क के संकेत, यातायात सिग्नल, गार्ड रेल और अन्य तत्व मानव ड्राइवर देख सकते हैं। इसके लिए एक तकनीक की आवश्यकता होगी जो डाटा ट्रांसमिशन या सिग्नल भेजने के बीच में देरी,विलबंता को कम कर सके। मोबाइल पीढ़ी की हर पीढ़ी कें साथ भेजे गए और प्राप्त सिग्नल के बीच की देरी धीरे धीरे कम हो रही है।

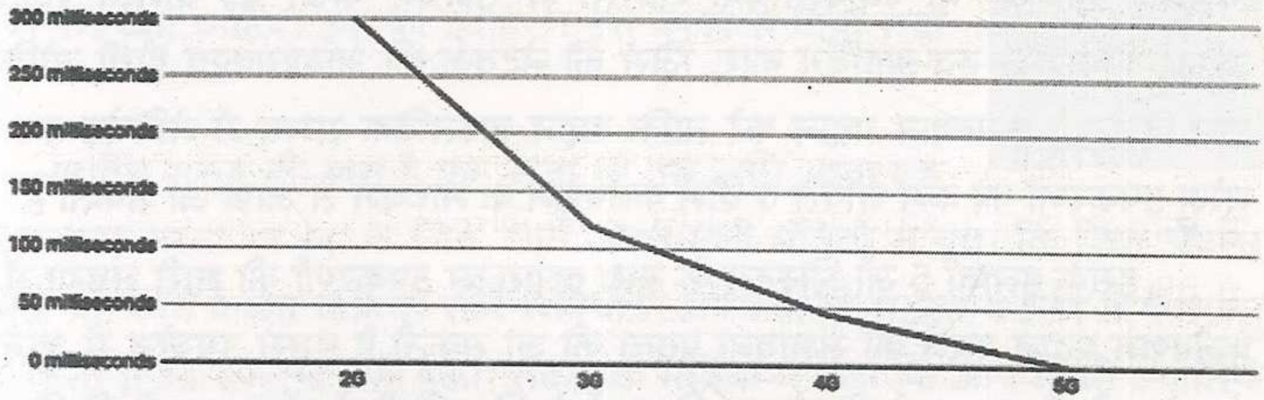

Chart: The Conversation, CC-BY-ND • Source: Based on data from hpbn.co and 5g.co.uk • Get the data

डाटा ट्रांसमिशन या सिग्नल भेजने के बीच में देरी,विलबंता को कम कर सके। कम विलंबता के उच्च डेटा की दरों को प्राप्त करने के लिए कई तकनीकी परिवर्तनों की आवश्यकता होती है, जिसमें उच्च रेडियो की आवृत्तियों का उपयोग करके एंव एंटेना के डिजाइनिंग द्वारा डेटा को भेजना भी शामिल है ताकि सभी उपकरणों के बीच कम से कम हस्तक्षेप हो सके। कोई भी बेस स्टेशनों के साथ 5-जी नेटवर्क होता है वह वर्तमान सेलुलर टावर के भौतिक रुप से छोटा होता है। यह एक दुसरे से अधिक नजदीक रखा जा सकता है। *4-जी स्टेशनों को 1 से 5 किमी की दूरी की आवश्यकता होती है जबकि 5 जी* बेस स्टेशनों को हर 250 मीटर की दूरी पर रखा जा सकता है।

पांचवी पीढ़ी के वायरलेस, या 5-जी सेलुलर, प्रौद्योगिकी की नवीनतम पुनरावृत्ति है, जो वायरलेस नेटवर्क की गति और प्रतिक्रिया को बढ़ाने के लिए डिजाइन और विकसित किया जाता है। 5-जी के साथ, वायरलेस ब्रॉडबैंड कनेक्शन पर प्रसारित डेटा 20 जीबीपीएस जितना अधिक हो जाता है जोकि तार नेटवर्क की गति से अधिक है 5-जी अपना अधिक उपलब्ध बैंडविड्थ और उन्नत एंटीना प्रौद्योगिकी के कारण

वायरलेस सिस्टम पर प्रसारित डेटा की मात्रा में तेज वृद्धि को प्रदान करता है।

5 जी नेटवर्क गति और विलंबता में सुधार के इलावा प्रबंधन सुविधाओं को नेटवर्क स्लाईसिंग प्रदान करता है जोकि मोबाइल ऑपरेटरों को 5 जी नेटवर्क के भीतर कई वर्चुअल नेटवर्क बनाने की अनुमति देता है। यह वायरलेस नेटवर्क कनेक्शन के विशिष्ट उपयोगों या व्यावसायिक मामलों में समर्थन करने की क्षमता रखता है। उदाहरण के लिए स्व-ड्राइविंग कार, जिसे की नेटवर्क की आवश्यकता होगी जोकि तेज कम विलंबता कनेक्शन प्रदान करे ताकि वाहन वास्तविक समय में नेविगेट कर सके। घरेलु उपकरणों को कम शक्ति व धीमे कनेक्शन के माध्यम से जोड़ा जा सकता है

इसके इलावा 5 जी सिस्टम के साथ वायरलेस उपकरणों की भारी संख्या से भारी कनेक्शन प्रदान करने की संभावना प्रदान की जा सकती है इससे उपयोग में आने वाले इंटरनेट चीजों उपकरणों की संख्या, किसानों के लिए मिट्टी में पोषक तत्वों की निगरानी, शिपिंग कंपनियों के लिए पैकेज स्थान और अस्पताल के रोगियों के लिए महत्वपूर्ण संकेतों की संख्या में भारी वृद्धि हो सकती है। मोबाइल और इंटरनेट-सक्षम उपकरणों पर बढ़ती निर्भरता को समायोजित करने के लिए अगले कई वर्षों के लिए 5 जी नेटवर्क सेवाएं प्रदान की जाएंगी।

सुनिल छिल्लर
संयुक्त निदेशक

प्रेरक प्रसंग
कार्य प्रारंभ करने का सही समय

अवसर कोई खोजे जाने की वस्तु नहीं है। जैसे ही कार्य के भली-भूत होने की संभावना दिखाई दे उसे बिना किसी देरी के प्रारम्भ कर देना चाहिए। इस का उदाहरण इस प्रकार से दिया गया है।

प्राचीन समय की बात है एक राजा था उसे अति आवश्यक कार्य प्रारम्भ करना था इस के लिये उसने अपने सभी मंत्रियों से पूछा कि किस अवसर पर मुझे यह कार्य करना चाहिये। सभी मत्रियों ने अपने अपने सुझाव व उतर दिये परन्तु राजा किसी से भी सन्तुष्ट नही हुआ। तब सभी मंत्रियों ने कहा कि आप किसी ज्योतिषी से पूछें। राजा ने बहुत सारे ज्योतिषियों को बुलाया और पूछताछ की लेकिन वे उनके उत्तरों से भी संतुष्ट नहीं हुए।

फिर राजा जंगल की तरफ निकल गया और वहां पर एक साधु दिखाई दिया। साधु उस समय खेत में हल जोत रहा था क्योकि उसे कुछ वर्षा होने की आशा थी। राजा ने जाकर उसे प्रणाम किया। साधु ने साधारण स्वभाव से प्रणाम का उत्तर तो दिया किन्तु अपना ध्यान खेत जोतने में लगाए रखा। चूंकि राजा था वह उस साधु की इस बात को भाँप गया और उसके इस व्यवहार से थोड़ा रुष्ट हुआ लेकिन चुप रहा। साधु अपने काम में लगा रहा। कुछ देर के बाद उसने राजा से पूछा कि राजन आज कैसे कष्ट किया। राजा ने फिर से वही प्रश्न पूछा कि किसी कार्य को प्रारंभ करने का सही समय कैसे जाने।

साधु ने मुस्कराते हुए राजा को अन्दर बैठने को कहा ओर उसने मटके से बीज निकालकर खेत में बो दिये। थोड़ी देर के बाद वर्षा होने लगी। साधु और वह राजा दोनों मौन बैठे थे। बारिश थमने के बाद साधु ने राजा से कहा कि अब आप अपने घर चले जाएं। यह सुनकर राजा ने कहा कि मेरे प्रशन का उत्तर तो नही दिया आपने। साधु बोला वह तो आपको मिल ही गया है। राजा ने कहा नही मैं तो अभी तक कुछ नहीं समझा।

साधु ने कहा कि हे राजन मुझे बारिश होने की उम्मीद दिखी तो मैंने हल जोत कर खेत में बीज बो दिया बगैर आप की बात का उत्तर दिये या आप की आवभगत किये। क्योकि यह समय बीज बोने के लिये उचित समय था।

तब राजा को बोध हुआ कि साधु ने बारिश होने की संभावना देखी और सब काम छोड़ कर सर्वप्रथम खेत जोता और बर्षा होने से पूर्व ही खेत में बीज बोया। इस प्रकार राजा ने समझ लिया कि कर्तव्यशील पुरुष अपनी करनी से ही उत्तर देते हैं और कथनी में विश्वास नहीं रखते। राजा यह सब देखकर तुरन्त अपने घर को लौटा और बिना किसी से पूछताछ किये व सलाह लिये अपना काम प्रारम्भ करने लगा।

मोहन लाल
प्रबंधक वित्त

इंसानियत ही धर्म है

बेईमानी का हर तरफ बोलबाला है दोस्तो
इंसानियत को तो जैसे मार डाला है दोस्तो।
इतने खुदगर्ज हो गए हैं इंसान
दया धर्म के मिट गए हैं निशान।
धरातल न जाने कितने जीवों का भार ढोता है
प्रभु की इस रचना में केवल इंसान का ही दिमाग होता है
कर इस का इस्तेमाल किसी की भलाई के काम पर
रोक ले खुद को, न बन धब्बा इंसानियत के नाम पर।
न जाने कैसी दुनिया है कि ईमान नहीं दिखता
हिन्दू भी दिखता है मुसलमान भी दिखता
अफ़सोस है कि नहीं दिखता तो इंसान नहीं दिखता।
कोई भी शक्ति इंसान को गिरा नहीं सकती
अगर इंसानियत ही खत्म तो कोई बचा नही सकती।
संभल जाएं हम वक्त है अभी भी हमारे पास
मिटनी न दें अपने रचियता की अभी आस।

शशि कुमार गोस्वामी
प्रशासनिक अधिकारी

बड़ो के सम्मान में भूल न करें

आर्शीवाद प्राप्त कर लेना हिन्दू धर्म में परम सौभाग्य तथा विजय का प्रतीक माना गया है। यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि अपने से बड़े बुर्जग माता-पिता एंव गुरूजनों से आशीर्वाद मिलने से मनुष्य का मनोबल बढ़ता है और उससे एक प्रकार की शक्ति अनुभव की जाती है। इसलिये प्रत्येक मंगल कार्य उत्सव पर्व तथा किसी भी शुभ कार्य के आरम्भ में अपने से बड़ों का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं।

किसी के प्रति सम्मान प्रकट करने या प्रणाम करने से मनुष्य छोटा नहीं हो जाता। सैद्धान्तिक मतभेद के बावजूद भी व्यवहारिक जीवन में बड़ों को सम्मान देने का उच्च आदर्श भारतीय संस्कृति की अपनी निजी विशेषता है। अनावश्यक अभिमान मनुष्य को पतित बनाता है। उसका उदय न हो इसलिये बड़ों के समक्ष सदैव विनम्र होकर रहने की शिक्षा हमें दी गई है। सम्मान से प्रत्येक व्यक्ति को एक प्रकार की आध्यात्मिक तृप्ति मिलती है। उसे प्रत्येक व्यक्ति चाहता है। आपको भी सम्मान मिले इस लिये इस आदि सभ्यता की परम्परा को जीवित रखना चाहिये। बड़े दुर्भाग्य की बात है कि आधुनिक शिक्षा धारी व्यक्तियों में अंहकार इतना बढ़ रहा है कि बड़ों को सम्मान देना वे अनावश्यक समझते हैं। इसे वे छोटापन समझते हैं।

कई व्यक्ति तो माता-पिता को मारने-पिटने और उन पर रौब दिखाने में ही अपना बड़प्पन मानते हैं। यह हमारी संस्कृति के नाम पर कंलक ही है कि लोग अपने जन्म दाताओं को त्रास दें। गुरु परंपरा लोगों में समाप्त होती जा रही है। बड़ों के प्रति सम्मान तथा अनुशासन होना पारिवारिक संगठन का मूल आधार है। जब तक इसमें प्रेम है तब तक संगठन कायम है। इसमें धन-धान्य की भी कमी नहीं रहती है। तुम जैसा प्रतीत होने की कामना करते हो वैसा बनने का प्रयास करो। जब हम लोग एक परिवार में एक (जुट) मिलकर रहेंगे हम पर बाहरी लोग भी आक्रमण नहीं कर पाएंगें। बड़ों की समता और अनुभवों का लाभ हम विनीत होकर पा सकते हैं।

हम जब बालक थे तो माता-पिता ने जिस तरह हमारी परवरिश की हमें भी उसी आदर-भावना से उनकी सेवा करनी चाहिए। सामायिक अनुशासन को बनाए रखने के लिए और आत्म सम्मान प्राप्त करने का भी यही मार्ग है कि हम भी अपने बड़ों के साथ वैसा ही व्यवहार करें। जो ऐसा नहीं करते उनकी विद्‌या का नाश हो जाता है और वे कृतध्न कहलाते हैं। माता-पिता और गुरुजनों के आर्शीवाद से जीवन संग्राम में विजय ही होती है।

दीदार सिंह

प्रोजैक्ट टेक्नीशियन

विश्वास और अंध विश्वास

विश्वास और अन्धविश्वास में थोड़ा सा ही फासला होता है। अन्धविश्वास होना अज्ञानता को दर्शाता है। यह हमारे अन्दर भय, निराशा, कमजोर बनना बहंम इत्यादि को पैदा करता है। आज के युग में भी बहुत पढ़े लिखे लोग भी अंधविश्वासों में जकड़े होते हैं। आज विज्ञान ने इतनी तरक्की कर ली है फिर भी लोगों में अंधविश्वास को कम नही कर पाये। इस बात से कोई इन्कार नही कर सकता कि हर इन्सान के दिल में आस्था होती है और विश्वास इतना मजबूत होता है कि उन्हें कोई भी तोड़ नही सकता, जिस के प्रति ये आस्था और विश्वास होता है उसे सभी भगवान के नाम से जानते हैं जोकि हर किसी के दिल में रहते हैं अलग-अलग रूप में चाहे वो किसी मन्दिर , गुरूद्वारा, मस्जिद या चर्च इत्यादि में हो। भगवान के प्रति विश्वास होना भी चाहिए क्योकि पूरी सृष्टि को चलाने वाली कोई ना कोई शक्ति तो है।

भगवान के प्रति इन्सान का विश्वास होना भी एक स्वाभिक बात है जोकि होनी भी चाहिए परंतु आज के बदलते युग में लोगों का विश्वास अब अंध विश्वास बन चुका है जिस की जगह धर्म के प्रति लोगों को बड़काने वाले राम रहीम, आसाराम इत्यादि जैसे लोगों में नही हैं पहले ज्यादातर लोगों की आस्था धर्म स्थान मन्दिर, गुरूद्वारे में होती थी परन्तु अब लोग इन स्थानों को छोड़ कर धर्म के नाम पर जो लोगों को गुमराह कर रहे हैं उन ठेकेदारों के प्रति विश्वास होने लगा है। आज ये लोग (आम आदमी) अपनी परेशानियों का हल ढूढने इनके पास जाते हैं, क्योंकि आज हर किसी की जिन्दगी में कोई न कोई परेशानी चलती रहती है। लोग पहले भगवान के आगे प्रार्थना करते तो थे परंतु जब कोई नतीजा नही निकलता तब वो ऐसे समाज के बनाये हुये धर्म के नाम पर जो लोगों को अपनी और अक्रशित करने की क्षमता रखते हैं इनकी और चला जाता है। ये धर्म के ठेकेदार जो बातों से लोगों को बेवकुफ बनाते हैं, लोगों से उनका पैसा और उनकी सोच को अपनी और अकृक्षित कर लेते हैं फिर ये जो चाहते हैं वो इन्सान वही सब कुछ करता है और उनके इशारों की कठपुतली बन जाता है। अपना घर परिवार छोड़कर धर्म के ठेकेदारों के पीछे लग जाता है, जिसका नतीजा इनके परिवारों को भुगतान पड़ता है जिसकी बजह से लड़कियां अपनी जान दे देती हैं। क्योकि उनके माता-पिता का अन्ध विश्वास इन धर्म के ठेकेदारों के प्रति इतना ज्यादा होता है कि ये अपने बच्चों की बातों पर यकीन न करके इन अन्ध विश्वासी लोगों पर करते हैं।

आज चाहे राम रहीम,आसाराम जैसे लोगों को सजा प्राप्त हो गई है परन्तु इनके जैसे और भी बहुत सारे लोग जो धर्म के नाम पर लोगों को बेवकुफ बनाते हैं और बनाते रहेगे उनका अंत कब होगा, ये तभी मुमकिन हो सकता है जब आम जनता इन अन्य विश्वासों पर यकीन करना बंद कर देगी और इस बात पर यकीन करेगी कि ये भी हमारी तरहां एक इंसान है , जिस को हम लोग भगवान का दर्जा दे देते हैं। हमें अगर भगवान से कोई प्रार्थना करनी है या कुछ मांगना है तो सीधा भगवान से ही मांगना चाहिए क्योंकि सच्चे मन से की गई प्रार्थना में बहुत ताकत होती है न कि इन पाखड़ियों के आगे झुकना चाहिए जो धर्म का मजाक तो उड़ते ही हैं बल्कि लोगों के दिलों में अंधविश्वास पैदा करते हैं। ये अंधविश्वास लोगों की जड़ों को खोखला करता जा रहा है जोकि आने वाले समय में इस का क्या परिणाम होगा ये कोई नही जानता । अंधविश्वास का होना लोगों में आम बात हो गई है कई तरहां के अंधविश्वास लोगों में देखने को मिलते हैं जैसे की कोई छींक दे तो यात्रा के लिए मत जाओ इसी प्रकार बिल्ली के रास्ता काटने से माना जाता है कि कुछ बुरा होने वाला है। कई लोग तो ये भी मानते हैं कि अगर घोड़े की नाल को घर के दरवाजे पर लगा दिया जाये तो वह सौभाग्य का प्रतीक होता है। इन सभी अंधविश्वास को मानना हास्यास्पद है। अंधविश्वास हर जगह पाये जाते हैं चाहे वह शहर हो या पिछड़ा इलाका हो अगर किसी को चेचक निकल जाये तो उस पर भगवान का प्रकोप मना जाता है। लेकिन मेडिकल विज्ञान की सहायता से इसे जड़ से खत्म कर दिया गया, ये सारा श्रेय विज्ञान को जाता है। इस प्रकार और भी कई प्रकार के अंधविश्वास हैं जिस में लोग जकड़े हुये हैं जिन में से निकल पाने में लोगों को पता नही कितने युग लग जायेगे।

हमें खुद पर विश्वास होना चाहिए कि अंधविश्वास को अपने जीवन में जगह नहीं देनी चाहिए। इन्सान में इतनी ताकत है कि वो जो चाहे हासिल कर सकता है बस उसका खुद पर विश्वास मजबूत होना चाहिए। जो खुद पर विश्वास करता है उसके सामने कोई भी समस्या ज्यादा देर टिक नही सकती, वो उस पर विजय हासिल कर सकता है। इसलिये हम कह सकते हैं कि विश्वास और अंधविश्वास में ज्यादा फासला नही होता बस इंसान की सोच पर सब कुछ निर्भर होता है कि उस का झुकाव किस पर है विश्वास हमें मजबूत बनाता है अन्धविश्वास हमें कमजोर बनाता है जीत हमेशा विश्वास की होती है इसलिये हमें अपने जीवन से अन्धविश्वास को हमेशा के लिए खत्म कर देना चाहिए।

बलवीर कौर
प्रोजैक्ट सर्विस स्टाफ

सौ में सत्तर आदमी

सौ में सत्तर आदमी फिलहाल, जब नाशाद हैं दिल,
पे रखकर हाथ कहिए देश क्या आजाद है।।
सौ में सत्तर आदमी ....।
कोठियों से मुल्क की मैयारं को मत आंकिए,
असली हिन्दुस्तान तो, गांव में आबाद है।।
सौ में सत्तर आदमी...।
जो उलझ के रह गई हैं, फाइलों के जाल में,
रोशनी वो गांव तक पहुंचेगी कितने साल में।।
सौ में सत्तर आदमी...।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग लेकिन आग जलनी चाहिए।।
सौ में सत्तर आदमी...।
सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरा मकसद है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।।
सौ में सत्तर आदमी...।
हम यहाँ पर आए हैं कुछ सीखने-सिखलाने को,
द्वन्द्व आपस में हो लेकिन काम करना चाहिए।।
सौ में सत्तर आदमी...।
एक चिंगारी कहीं से ढूंढ लाओ दोस्तों,
इस दिये में तेल से भीगी हुई बाती तो है।।
सौ में सत्तर आदमी...।
दुःख नहीं कोई भी अब उपलब्धियों के नाम पर,
और कुछ हो या न हो, आकाश-सी छाती तो है।।
सौ में सत्तर आदमी...।

हिमानी नेगी

एम.टेक द्वितीय वर्ष

कैसा हो स्कूल हमारा (प्रेरक गीत)

जहाँ न बस्ता कंधा तोड़े, ऐसा हो स्कूल हमारा
जहाँ न पटरी माथा फोड़े, ऐसा हो स्कूल हमारा
जहाँ न अक्षर कान उखाड़े, ऐसा हो स्कूल हमारा
जहाँ न भाषा जख्म उखाड़े , ऐसा हो स्कूल हमारा
कैसा हो स्कूल हमारा

जहाँ अंक सच-सच बतलायें, ऐसा हो स्कूल हमारा
जहाँ प्रश्न हल तक पहुँचाये, ऐसा हो स्कूल हमारा
जहाँ न होवे झूठ दिखावा, ऐसा हो स्कूल हमारा
जहाँ न सूट-बूट का हवा, ऐसा हो स्कूल हमारा
कैसा हो स्कूल हमारा

जहाँ किताबें निर्भय बोले, ऐसा हो स्कूल हमारा
मन के पन्ने-पन्ने खोले, ऐसा हो स्कूल हमारा
जहाँ न कोई बात छुपाये, ऐसा हो स्कूल हमारा
जहाँ न कोई दर्द दुखाये, ऐसा हो स्कूल हमारा
कैसा हो स्कूल हमारा

जहाँ फूल स्वाभाविक महकें, ऐसा हो स्कूल हमारा
जहाँ बालपन जी भर चहके, ऐसा हो स्कूल हमारा
जहाँ न अक्षर कान उखाड़े, ऐसा हो स्कूल हमारा
जहाँ न भाषा जख्म उखाड़े, ऐसा हो स्कूल हमारा
कैसा हो स्कूल हमारा

हिमानी नेगी
एम.टेक द्वितीय वर्ष

तन-मन व मस्तिष्क को शांत एवं प्रसन्नचित्त रखें

आजकल की तनाव, अथक प्रयास एवं भाग-दौड़ भरी जिंदगी में मन का तन के साथ एकजुट एवं तनाव-रहित रहना अपने और परिजनों के लिए अत्यंत आवश्यक है। आपका तनाव रहित एवं सन्तुष्ट-मुख अपरिचित-व्यक्ति और तो और दुश्मन को भी आपकी दोस्ती के लिए अपनी ओर अग्रसर करवा सकता है।

कोई भी व्यक्ति (महिला/ पुरुष) जो 45 साल उम्र या उससे अधिक हैं, उनके लिए अत्यंत जरुरी हैं कि अगर वो अपने 24 घंटो में से 1 घंटा व्यायाम एवं निम्नलिखित बातों का ध्यान रखता है तो वह तब ही दिन के 24 घंटों में से 23 घंटे अपने लिए उपयोगी बना सकता है।

संतुलित आहार

एक संतुलित आहार आपके शरीर के लिये जितना आवश्यक होता है उतना ही आपकी शारीरिक गतिविधियों को भी ज्यादा प्रभावित करता है इससे आपका तन,मन शांत, खुश और दुरुस्त रहता है। हरे पत्तेदार सब्जियां,बिन्स और अनाज गेहूं,सोयाबीन, मूंगफली, फल आदि चीजों में पौष्टिक तत्वों की ज्यादा मात्रा पाई जाती है जो आपके शरीर को तनाव से लड़ने में सहायता प्रदान करने में अहम भूमिता निभाता है। एक अच्छा भोजन दुखी मन को भी खुश रखने की शक्ति प्रदान करता है।

अधिक मात्रा में पानी पीयें

मानव शरीर करीब 75% पानी से निर्मित है एवं इस कारण पानी मानव-शरीर का एक बहुत महत्वपूर्ण एवं अभिन्न अंग है। पानी आपके शरीर में जलयोजन को भली - भांति बनाये रखने एवं शरीर को हानिकारक रसायनों से मुक्त रखने के लिए अति महत्वपूर्ण है, जो आपके मस्तिष्क को बेहतर रूप से केंद्रित करने में सहायता प्रदान करता है। आराम प्रदान करने वाले अन्य व्यायामों में सहायता के लिए, अधिक मात्रा में पानी पीयें।

व्यायाम करें

व्यायाम, एन्डोरफिन का उत्पादन बनाने के लिए उत्तरदायी होता है, जिसके परिणामस्वरुप खुशी का अहसास पैदा होता है। तनाव भरे कार्यक्रम को निपटाने के पश्चात अपने मस्तिष्क को आराम देने वाले कुछ व्यायाम करने का प्रयास करें। व्यायाम तन व मन को सुदृढ़ करने में अत्यंत कारगर ओर लाभदायक है।

एकाग्रता,ध्यान व चिन्तन

शरीर में प्राणतत्व के बढ़ने से प्रसन्नता, शांति और उत्साह का संचार भी बढ़ जाता है। ध्यान के कारण शरीर की आतंरिक क्रियाओं में विशेष परिवर्तन होते हैं और शरीर की प्रत्येक कोशिका प्राणतत्व (ऊर्जा) से भर जाती है। ध्यान व चिन्तन से होने वाले लाभः

- उच्च रक्तचाप का कम होना, रक्त में लैक्टेट का कम होना, उद्वेग,व्याकुलता का कम होना।
- तनाव से सम्बंधित शरीर में कम दर्द होता है। तनाव जनित सिरदर्द, घाव, अनिद्रा, मांशपेशियों एवं जोड़ों के दर्द से राहत मिलती है।
- भावदशा व व्यवहार बेहतर करने वाले सेरोटोनिन हार्मोन का अधिक उत्पादन होता है।
- प्रतिरक्षा तंत्र में सुधार आता है।
- ऊर्जा के आंतरिक स्त्रोत में उन्नति के कारण ऊर्जा स्तर में वृद्धि होती है।

नकारात्मक विचारों से रहे दूर

नकारात्मकता के अंधकार से सकारात्मकता के उजाले की ओर अग्रसर हों ऐसे लोगों को दोस्त बनाएं जो हमेशा सकारात्मक-विचार रखते हों कुछ लोग इतने नकारात्मक होते है कि उन के साथ रह कर सकारात्मक-सोच वाला व्यक्ति भी बदलने लगता है ऐसे लोग हर समय नकारात्मक माहौल बनाए रखते हैं, ऐसे लोगों से बचें, क्योंकि उन के साथ रह कर जीवन में कुछ हासिल नहीं होगा बल्कि अन्य लोग भी आप

से दूरी बनाने लगेंगे वर्तमान में रहने की कोशिश करें जो बीत गया है उस के बारे में विचार कर दुखी न हों और जो होने वाला है उस की सोच में डूबने के बजाय जो आज है उससे आनंदित हो।

पैदल चलना

अगर कोई भी व्यायाम करने में मन नहीं करता हो या आलस आये तो, कम से कम 40 मिनट्स (पहले 20 मिनट्स एक तरफ थोड़ा तेज रफतार में चले एवं वापस मुड़कर बाकि के 20 मिनट्स में अपने प्रारंभिक स्थान में पहुंचने की कोशिश करे) तक रोजाना रात्रि भोज के बाद जरुर पैदल चले।

केवल 40 मिनट रोज़ पैदल चलना, साथ में संतुलित भोजन व अच्छी नींद आपको अपने डॉक्टर निरीक्षण से तकरीबन पूरी तरह निजाद दिला सकता है।

संजय खंडेलवाल
तकनीकी अधिकारी

प्रदूषण के प्रकार

प्रदूषण कई प्रकार के होते हैं और ये विभिन्न स्रोतों से आ सकते हैं इस कारण इसके अलग अलग परिणाम हो सकते हैं प्रदूषण के बारे में समझने से पर्यावरणीय रुप से व्यक्तियों को इन खतरों से बचने के लिए जागरुक किया जाता है आधुनिक काल में प्रदूषण के 9 मान्यता स्रोत हैं। प्रदूषण के इन स्रोत का प्राकृतिक दुनिया पर नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता लेकिन मनुष्यों के स्वास्थ्य पर मापनीय प्रभाव डाल सकते है। ये इस प्रकार हैं

वायु प्रदुषण

वायु प्रदूषण को वायुमंडल की प्राकृतिक संरचना और रसायन शास्त्र द्वारा वायुमंडल के किसी भी भाग को प्रदूषण किया जा सकता है। यह धूल या अत्यंधिक गैसों जैसे कि कार्बन डाइऑक्साइड़ या अन्य वाष्पों कणों के रुप में हो सकता है जिन्हे कार्बन चक्र या नाइट्रोजन चक्र जैसे प्राकृतिक चक्रों के माध्यम से हटाया नही जा सकता है। वायु प्रदूषण विभिन्न प्रकार के स्रोतों से आता है जैसे:

१) वाहन या विनिर्माण निकास

२) वन आग,ज्वालामुखी विस्फोट, शुष्क मिट्टी का कटाव और अन्य प्राकृतिक स्रोत

३) भवन निर्माण या विध्वंस

जल प्रदूषण

जल प्रदूषण में किसी भी प्रदूषित पानी, चाहे रासायनिक, कण, या जीवाणु पदार्थ से हो जो पानी की गुणवत्ता और शुद्धता को कम कर देती है। जल प्रदूषण महासागरों, नदियों, झीलों, और भूमिगत जलाशयों में हो सकता है, और जैसे ही जल चक्र के माध्यम से विभिन्न जल स्रोत एक साथ बहते हैं प्रदूषण फैल सकता है।

जल प्रदूषण के कई कारण हैं:

१. मिट्टी के कटाव से बढ़ी तलछट

२. अनुचित अपशिष्ट निपटान और कूड़ेदान

३. पानी की आपूर्ति में मिट्टी प्रदूषण की लीचिंग

४. पानी की आपूर्ति में कार्बनिक पदार्थ क्षय

१. जल प्रदूषणः-

जल प्रदूषण के प्रभाव से पेयजल के पानी की मात्रा में कमी हो जाती है, ये फसल सिंचाई के लिए पानी की आपूर्ति को कम करती है और वन्यजीवन की आबादी को प्रभावित करती है जिसमें जीवित रहने के लिए एक निश्चित शुद्ध पानी की आवश्यकता होती है।

२. मिट्टी प्रदूषण

मिट्टी प्रदूषण प्राकृतिक विकास और भूमि के संतुलन को रोकता है चाहे वह खेती, निवास या वन्यजीव संरक्षण के लिए उपयोग किया गया हो। कुछ मिट्टी प्रदूषण, लैंडफिल के निर्माण को करते हुए हो जाते हैं जिसका हमारे ऊपर व्यापक प्रभाव पड़ता है।

मृदा प्रदूषण के कई स्रोतों हैं:-

१. खतरनाक अपशिष्ट और सीवेज फैलता है

२. गैर-टिकाऊ कृषि पद्धतियां, जैसे कि अकार्बनिक कीटनाशकों का भारी उपयोग

३. वनों की कटाई, और अन्य विनाशकारी प्रथाओं के कारण

४. घरेलू डंपिंग और कूड़ेदान

मृदा प्रदूषण से फसल की पैदावार कम हो जाती है। वन्यजीव आवास,पानी मिट्टी के कटाव और मरुस्थीकरण का नुकसान हो सकता है।

३.ध्वनि प्रदूषण

कार के धुएं से वायु प्रदूषण, मानव की गतिविधि के शोर के कारण भी अवांछनीय स्तर को भी प्रभावित करता है जोकि प्रभावित क्षेत्र में रहने वाले मानक को बाधित करता है। प्रदूषण शोर से भी आ सकता है जैसे कि यातायात,हवाई अड्डों,रेल मार्ग,उत्पादन

और संगीत कार्यक्रम आदि।

कुछ शोर प्रदूषण अस्थायी होते हैं और कुछ स्थायी होते हैं। जिस से की वन्यजीवन में गड़बड़ी, और जीवनशैली में सामान्य गिरावट आदि ।

रेडियोधर्मी प्रदूषण

रेडियोधर्मी प्रदूषण कई बार बहुत ही हानिकारक होते है, यहां तक कि वह घातक भी बन जाते हैं। इसकी तीव्रता और क्षति को उलटने में कठिनाई के कारण, रेडियोधर्मी प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए सख्त नियम हैं।

यूरेनियम खनन परिचालन

विकिरण प्रदूषण मानव और वन्यजीवन की आबादी के लिए जन्म दोष, कैंसर, नसबंदी, और अन्य स्वास्थ्य समस्याओं का कारण बन सकता है। यह मिट्टी को भी निर्जलित कर सकता है ये पानी और वायु प्रदूषण में भी योगदान देता है।

वनों की कटाई

पानी की आपूर्ति को नियंत्रित करने वाले तापमान का नुकसान,जैसे-जैसे तापमान बढ़ता है,उससे हल्के जलवायु परिवर्तन को देखा जा सकता है, जिस से वन्यजीवन आबादी तेजी से ठीक होने में असमर्थ हो सकती है।

दृश्य प्रदूषण

दृश्य प्रदूषण - आंखों - अन्य प्रदूषण या केवल अवांछनीय, अनैतिक विचारों के कारण हो सकता है। कुछ क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता को कम कर सकते है।

दृश्य प्रदूषण के स्रोतों इस प्रकार हैं:

- बिजली के तार
- निर्माण क्षेत्र
- बिलबोर्ड और विज्ञापन

जबकि दृश्य प्रदूषण के स्वास्थ्य के लिए पर्यावरणीय प्रभाव होते हैं, वहीं आंखों पर

हानिकारक प्रभाव डालते है।

व्यक्तिगत प्रदूषण

धूम्रपान व्यक्तिगत प्रदूषण है।व्यक्तिगत प्रदूषण हानिकारक कार्यों के साथ किसी के शरीर और जीवनशैली का प्रदूषण है। इसमें शामिल हो सकते हैं:

अत्यधिक धूम्रपान, पीने या नशीली दवाओं के दुरुपयोग

भावनात्मक या शारीरिक दुर्व्यवहार

गरीब रहने की स्थिति और आदतें

गरीब व्यक्तिगत दृष्टिकोण

कुछ मामलों में, देखभाल प्रदूषणकर्ताओं द्वारा व्यक्तिगत प्रदूषण फैलाया जा सकता है, जबकि अन्य मामलों में यह स्वैच्छिक कार्यों के कारण होता है। अपने जीवन में सकारात्मक कदम उठाने से प्रदूषण के अन्य स्रोतों को खत्म करने में मदद मिल सकती है ताकि आप अधिक उत्पादक, संतोषजनक जीवन जी सकें।

प्रदूषण के प्रकार जुड़े हुए हैं

सभी प्रकार के प्रदूषण एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। उदाहरण के लिए, प्रकाश प्रदूषण को ऊर्जा की आवश्यकता होती है, जिसका मतलब है कि विद्युत संयंत्र को बिजली की आपूर्ति के लिए अधिक जीवाश्म ईंधन जला देना आवश्यक है। वे जीवाश्म ईंधन वायु प्रदूषण में योगदान देते हैं, जो पृथ्वी पर एसिड बारिश के रूप में लौटता है और जल प्रदूषण को बढ़ाता है। प्रदूषण का चक्र अनिश्चित काल तक जा सकता है, लेकिन एक बार जब आप विभिन्न प्रदूषण प्रकारों को समझते हैं, वे कैसे बनाए जाते हैं, और उनके प्रभाव क्या हो सकते हैं, तो आप अपने और अपने आस-पास के अन्य लोगों के लिए खराब परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए व्यक्तिगत जीवन शैली में बदलाव कर सकते हैं।

अनिल कुमार
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी

मोबाइल का दूरूपयोग

मोबाइल का उपयोग आज हर आम आदमी चाहे वो एक बिजनस्मैन(व्यवसायी), नौकरीपेशा या मजदूर हो सब इसका प्रयोग करते हैं। मोबाइल ने लोगों का जीवन बहुत आसान कर दिया है। इस का आविष्कार हमारे जीवन में किसी वरदान से काम नही है। अपनी जरुरत के हिसाब से हर कोई इसे खरीदने की क्षमता रखता है।

रिलांइस का जीओफोन जिसकी मात्र कीमत 1500/- ने तो लोगों का जीवन भी आसान कर दिया है इस का प्रयोग करना इतना आसान है कि कोई भी चाहे वो पड़ा लिखा ना हो तो भी आसानी से इस का प्रयोग कर सकता है। इस का महीने का रिर्चाज मात्र रूपये 49/- का है जिस में असीमित काल और इंटरनैट पैक भी दिया जाता है। इस बात से कोई भी इन्कार नही कर सकता कि आज कोई भी इन्सान नहीं होगा जिस के पास मोबाइल न हो। जहां मोबाइल के हजारों फायदे हैं वही इसका नुकसान भी है। मोबाइल का प्रयोग लोगों में इतना ज्यादा हो गया है कि कोई किसी से बात करना पंसद ही नही करता, बस मोबाइल के माध्यम से ही मैसेज करना या कॉल करना पंसद करते हैं। जिस को भी देखो मोबाइल पर ही लगा होता है, इसका इतना ज्यादा प्रयोग करने से लोगों में आपसी बातचीत और मिलना धीरे धीरे कम होता जा रहा है। कोई भी किसी रिश्तेदार के घर या दोस्त से मिलने जाने को पंसद नही करता बस वीडियो काल कर के ही लगता है कि बस मिलना हो गया। माता-पिता बच्चों से उम्मीद करते हैं कि वो उनके साथ समय बिताये, परन्तु बच्चों ने अपनी जिंदगी को इतना व्यस्त किया हुआ है कि उनके पास माता-पिता के लिये समय ही नही होता।

यहां मोबाइल ने हमारा जीवन इतना आसान कर दिया है कि इस ने मीलों की दूरियों को खत्म कर दिया है वही दिलों में दूरियां पैदा होती जा रही हैं कोई किसी के घर जाना पंसद नही करता, अगर इन्सान चला भी जाये तो रिश्तेदार ही कह देते हैं कि फोन करके आना था पहले का समय ले कोई अगर किसी के घर आ भी जाता था तो लोग बहुत आवभगत करते थे उनकी खुशी उनके चेहरे पर साफ नजर आती थी परन्तु आज

अगर किसी के घर जाये तो वो खुशी कही दूर तक भी नजर नहीं आती। बच्चे मोबाइल को ही अपना दोस्त समझते हैं क्योकि गुगल ही उनके सारे सवालों का जवाब दे देते हैं, जिस कारण उनको दोस्तों की जरूरत ही महसूस नही होती। खेल भी मोबाइल पर ही खेलेगे, न कि पार्क में जाकर। शारीरिक गतिविधियां तो बच्चों की खत्म ही होती जा रही है जिस कारण वो कई बिमारियों का शिकार होते जा रहे हैं।

मोबाइल हमारी जरूरत के लिये बना है ना कि हम मोबाइल की जरुरत है। हमें उस का प्रयोग सिर्फ उतना ही करना चाहिए जितनी की हमें उस की जरूरत हो न कि हमें उस का आदि बनना चाहिए। मोबाइल का उपयोग अगर सही ढंग से किया जाये तो ये हमारे लिये वरदान है, अगर हम इस का दुरूपयोग करते हैं या इसके गुलाम है तो ये हमारे लिये किसी श्राप से कम नही। ये हमारे लिये बना है, हम इस के लिये नही, ये बात हमें समझनी चाहिए। और बच्चों को भी समझनी चाहिए।

बलवीर कौर
प्रोजैक्ट सर्विस सपोर्ट

एक नया पार्क

आओ मिलकर हम सब एक नया पार्क बनाये। सबसे पहले हम ट्रैक्टर के सहारे उस जमीन की खोदाई करते हैं। उबड़ खबड़ जमीन नदी नाले में भी सरकार पार्क बना रही है।

फ़िर उस जमीन से कक्कड़,पत्थर,गिट्टी ,गटक्का इत्यादि चुनकर एक जगह ढ़ेर लगा देते हैं। फिर उस कबाड़ को उठाकर ट्राली से किसी गड्ड़े में डाल देते हैं। उस जगह को साफ सुथरा कर देते हैं। उस जगह को फावड़ा या (कस्सी) से खोदाई करते हैं।

पार्क में रेता,खाद अच्छी मिट्टी डालते हैं और ऊँची नीची जगह को पटरी या कस्सी से बराबर करते हैं।

फिर अच्छी किस्म की घास लगाते हैं। सबसे पहले हम पानी की सुविधा इंजीनियर (अभियन्ता) के द्वारा कराते हैं। थोड़ी थोड़ी करके घास लगाते जाते हैं। साथ-साथ पानी भी लगाते रहते हैं। इस से घास हरा भरा हो जाता है।

पार्क के चारों तरफ क्यारी बनाकर हैज या बाढ़ लगा देते हैं चारों तरफ छाया के लिए पेड़ पौधे लगाते हैं। जैसे गुरु बेलिया, कचनार, बहैड़ा, अशोका, रबड़ प्लांट, आम, जामुन इत्यादि अनेक प्रकार पेड पौधे लगा दिये जाते हैं।

बड़े बड़े पार्कों में शोदार बोतल पाम, बोतल ब्रुश, फैक्कस और फूलदार पौधे कनैर, गुलमोहर इत्यादि अनेक प्रकार के पेड़ पौधे लगा दिये जाते हैं।

फिर पार्क के अन्दर छोटी-छोटी क्यारियां बनाकर अच्छी किस्म के फूल लगा देते हैं जैसे गुलाब, रंग बिरंगे डेलिया, गुल दाउददी,पिंजीबर्फ, गेंदा,गेंदी इत्यादि अनेक प्रकार के फूल लगा दिये जाते हैं।

मुख्य द्वार पर अच्छे अच्छे गमले रख दिये जाते हैं तभी पार्क, कार्यालय या घर की शोभा बढ़ जाती है। हर बड़े पार्क में कुछ माली नियुक्त किये जाते हैं उसी में से एक तकनीकी या जानकर मुख्य माली रख लिया जाता है। जिसको फूल पौधे कटाई छटाई का पुरा अनुभव होता है।

पार्क में सैर करने के लिए फुटपाथों का निर्माण किया जाता है और प्रकाश की

सुविधा भी की जाती है इससे मालियों,प्लम्बर और मिस्त्रियों को रोजगार मिल जाता है। आजकल घर के आस पास भी पार्क बनाये जा रहे हैं जिसमें सुबह शाम लोग आकर व्यायाम करते हैं। बच्चों के झूलने के लिए झूले भी लगाये जाते हैं पार्क में कई तरह की जड़ी-बूटियां भी मिल जाती हैं जैसे कि एलोवियरा,बेहड़ा आदि जड़ी-बूटियां भी मिल जाती हैं जिनसे आर्युवैदिक की औषिधि बनाई जाती हैं

रामकरन यादव
बागवानी माली

जीवन की कोमल नौका

मैं अबला तंरगिनी, सूने हैं तीर मेरे
तम के निशाचर भी, प्राणों को खड़े हैं घेरे
पाषाणों की झड़ी लगी, घास-फूस की सेज सजी
जीवन की कोमल नौका, पीड़ा के बोझ से दबी
मेरे नयनों को कोना-कोना, अश्रुओं के जल से भरा
कल-कल रुदन की अग्नि से, उर मरा है भरा पड़ा।
जब कभी भीं, भास्कर की गरमी ने आकर
मेरे अश्रुओं को सुखाने का यत्न किया
तब-तब दूर कहीं से एक बदली ने आकर
मुझे पुनःआंसुओं से भरने का प्रयत्न किया
चाहे मैं हूँ अबला, एक बुझी- सी सरिता
पर अंतर में मेरे गूंजती, कहीं आस की कविता
जो पल-पल मुझे याद दिलाती कहती है
इन्हीं अश्रुओं की बूंद-बूद से मिलकर
तेरे अंदर से तूफान की ऐसी लहर उठेगी
तेरी क्रोधाग्नि में सब कुछ जलकर भस्म होगा
ये दुनिया स्वयं तेरे चरणों में झुकेगी
इसी आस रश्मि के सहारे ही
मैं वेदना सहन करती हूँ
मैं निरंतर बहती रहती हूँ।

सरनजीत कौर
प्रोजैक्ट सर्विस सपोर्ट

कर्मों का फल आज नही तो कल भोगना ही पड़ेगा

यदि कर्मों का फल तुरन्त नहीं मिलता तो इससे यह नहीं समझ लेना चाहिए कि उसके भले-बुरे परिणाम से हम सदा के लिए बच जाएंगे। कर्म फल एक ऐसा अमिट तथ्य है जो आज नहीं तो कल भुगतना ही पड़ेगा। कभी-कभी इन परिणामों में देर इसलिए होती है क्योंकि ईश्वर मानवीय बुद्धि की परीक्षा करना चाहता है कि व्यक्ति अपने कर्तव्य धर्म समझ सकने और निष्ठापूर्वक पालन करने लायक विवेक बुद्धि संचित कर सका है या नहीं। जो दण्ड भय से डरे बिना दुष्कर्मों से बचना मनुष्यता का गौरव समझता है और सदा सत्कर्मो तक ही सीमित रहता है, समझना चाहिए कि उसने सज्जनता की परीक्षा पास कर ली और पशुता से देवत्व की ओर बढ़ने का शुभारम्भ कर दिया। लाठी के बल पर जानवरों को किसी भी रास्ते पर चलाया जा सकता है और अगर ईश्वर भी बलपूर्वक अमुक मार्ग पर चलने के लिए विवश करता तो फिर मनुष्य भी पशुओं की श्रेणी में आ जाएगा। इससे उसकी स्वंतत्र आत्म-चेतना विकसित हुई या नही इसका पता नही चलेगा। भगवान ने मनुष्य को भले या बुरे कर्म करने की स्वतंत्रता इसीलिए प्रदान की है कि वह अपने विवेक को विकसित करके भले-बुरे का अन्तर करना सीखे और दुष्परिणामों के शोक-संतापों से बचने एवं सत्परिणामों का आनंद लेने के लिए स्वयं ही अपना पथ निर्माण कर सकने में समर्थ हो।

अतः एव परमेश्वर के लिए यह उचित ही था कि मनुष्य को अपना सबसे बड़ा बुद्धिमान और सबसे जिम्मेदार बेटा समझकर उसे कर्म करने की स्वतंत्रता प्रदान करे और यह देखे कि वह मनुष्यता का उत्तरदायित्व सम्भाल सकने में समर्थ है या नही? परीक्षा के बिना वास्तविकता का पता भी कैसे चलता और उसे अपनी इस सर्वश्रेष्ठ रचना मनुष्य में कितने श्रम की सार्थकता हुई यह कैसे अनुभव होता है। आज नहीं तो कल उसकी व्यवस्था के अनुसार कर्मफल मिलेगा ही। देर हो सकती है पर अन्धेर नहीं। ईश्वरीय कठोर व्यवस्था, उचित न्याय और उचित कर्म-फल के आधार पर ही बनी हुई है। तुरन्त न सही कुछ देर बाद अपने कर्मों का फल भोगने के लिए हर किसी को तैयार रहना चाहिए।

श्री गुरुनानक देव जी ने भी इस संसार को कर्मा सन्धड़ा खेत बताया है अर्थात जैसा बोयेंगे वैसा ही काटेगें। एक सन्त ने यह कहा है कि अगर तुम्हारे मन में किसी को भी दुःख देने का जरा सा भी भाव आता है तो वह बीज आप अपने लिये बो रहे हो। क्योकि तुम्हारे मन में जो दुःख देने का बीज है वह आप के ही मन की भूमि में गिरेगा। किसी दूसरे के मन की भूमि में नही गिर सकता। कर्म रुपी बीज आप के भीतर ही होगा और फल भी आपको ही भोगना पड़ेगा। बड़ी सुन्दर पक्तियां कर्मों के उपर लिखी गई हैं।

कर्म की गठरी लाद के जग में फिरे इन्सान,

जैसा करे वैसा भरे, विधि का यही विधान ।

कर्म करे किस्मत बने जीवन का ये विधान,

कर्म करे किस्मत बने जीवन का ये मर्म,

प्राणी तेरे भाग्य में तेरा अपना कर्म।

किसी और सन्त ने तो यहां तक कहा है कि कर्मों का फल कोई मिटा नहीं सकता जो कर्मों का लेख लिखा गया है वह इन्सान को हर हालत में भोगना ही पड़ेगा।

मोहन लाल
प्रबंधक वित्त

प्यारी माँ

स्नेहमयी माँ मुझ पर अपना प्यार लुटाती है।
कोख में आते ही वो माँ बन जाती है।
सुखद आंनद का हर पल अहसास करती है।
अपने साथ वो मेरा भी ख्याल रखती है।
बुरी नजर ना लगे ऑचल से ढ़क लेती है।
देखने की इच्छा हर पल संजोय रखती है।
स्नेहमयी माँ मुझ पर अपना प्यार लुटाती है।

हर पल मेरे ही आने का इतजार करती है।
ऩये-नये ऋतु फल का स्वाद भी चखाती है।
रोज नये गीत और लोरी भी सुनाती है।
अदम्य साहस का परिचय भी दिखलाती है।
इस अदभुत दुनिया में जब मुझे लेकर आती है।
स्नेहमयी माँ मुझ पर अपना प्यार लुटाती है।

हजारों आँखे मुझे देख इतरांती और इठलाती हैं।
मुझे बाँहों में भर लेने का तत्परता भी दिखलाती है।
नये-नये चेहरों से मेरा परिचय भी करवाती है।
हर दिन नये-नये जगहों पर घुमाती है।
देवी और देवताओं का दर्शन भी करवाती है।
स्नेहमयी माँ मुझ पर अपना प्यार लुटाती है।

खिलौनों के बीच मुझे बिठा कह कहें लगाती है।
मेरे साथ खेलती और इतराती है।
बार-बार कभी सुरज कभी चाँद कहकर पुकारती है।
रात में चाँद और तारे भी दिखलाती है।
स्नेहमयी माँ मुझ पर अपना प्यार लुटाती है।

मुझे चलना और बोलना भी सिखाती है।
माँ-माँ बोलने का रट भी लगवाती है।
मेरे माँ बोलते ही भावुक सी हो जाती है।
बाँहो में उठा माँ शोर मचाने लगती है।
माँ कह बेटा माँ -माँ बार -बार बोलवाती है।
स्नेहमयी माँ मुझ पर अपना प्यार लुटाती है।
अपने शब्दों को समेट लेना चाहता हूँ
चलते हुए कलम को रोक लेना चाहता हूँ ।
माँ की मीठी यादों में डूब जाना चाहता हूँ ।
लिखते-लिखते खो जाता हूँ दूर कहीं शून्य में।
स्नेहमयी माँ मुझ पर अपना प्यार लुटाती है।

सन्नी कुमार
परियोजना अभियंता

महिला सशक्तिकरण

भारत एक प्रसिद्ध स्वतंत्र देश है, जोकि अपने प्राचीन समय से ही अपनी सभ्यता,संस्कृति,धर्म,विरासत तथा भौगोलिक विशेषताओं के लिए जाना जाता है। जबकि दूसरी ओर ये अपने पुरूषवादी राष्ट्र भारत के रूप में भी जाना जाता है। भारत के प्राचीन समय में महिलाओं को पूर्ण रूप से स्वतन्त्रता नही दी जाती थी तथा उन्हे घर की चार दीवारी तक ही सीमित रखा जाता था। आज के समय में महिलाओं को प्राथमिकता दी जाती है हालाँकि समाज तथा परिवार में महिलाओं के साथ बुरा व्यवहार भी किया जाता है। और उनको सिर्फ परिवारिक जिम्मेदारियों के लिया ही समझा जाता था। उन्हें अपने अधिकारों तथा स्वतंत्रता से बिल्कुल वंचित रखा जाता था। हमारे देश में कई लोग नारी को माँ का दर्जा देते हैं, लेकिन माँ के इस असली अर्थ को नहीं समझते थे। हमारी भारतीय संस्कृति में महिलाओं को हमेशा से उच्च स्थान मिला हुआ है, कहा जाता है कि जहाँ नारी का सम्मान होता है वहाँ देवताओं का वास होता है, पंडित जवाहर लाल नेहरु द्वारा कहा गया मशूहर वाक्य लोगों को जगाने के लिए, महिलाओं को जागृत होना जरुरी है। महिलाये जब एक बार अपना कदम उठा लेती है, परिवार आगे बढ़ता है, गाँव आंगे बढ़ता है तथा राष्ट्र विकास की और उन्मुख होता है।

हमारे भारत में लक्ष्मी बाई, कल्पना चावला जैसी कई महिलाएं हुई हैं जिन्होने अपने परिवार का ही नही, देश का नाम भी रौशन किया है, महिला सशक्तिकरण का मतलब है कि कोई भी महिला अपने जीवन तथा परिवार से जुड़े निर्णय खुद ले सके। महिला सशक्तिकरण के नाम पर आज कल महिलाओं का आरक्षण, महिलाओं की सुरक्षा आदि कई बातें सुनने में आती रहती हैं, पर अ़सल में महिला सशक्तिकरण की शुरुआत तब होगी जब हम महिलाओं को बचपन से ही अपने निर्णय लेने सिखायेंगे, वो जो करना चाहती हैं, जिस क्षेत्र(फील्ड) में अपना कैरियर बनाना चाहती हैं उसे यह चुनने की स्वतन्त्रता देते हैं। देश के तथा उनके उचित विकास के लिये हर क्षेत्र में स्वतंत्र होने , उसके अधिकारों को समझना तथा महिलाओं को उनका अधिकार देना है। महिलाएं इस राष्ट्र के भविष्य के रुप में एक बच्चे को जन्म देती हैं। इसलिये बच्चों के विकास और

वृद्धि के माध्यम से ही इस राष्ट्र के उज्जवल भविष्य को बनाने में वो सबसे बेहतर तरीके से योगदान दे सकती हैं। कुछ समय पहले तक भारतीय महिलाओं का नाम अच्छा खाना बनाने और अच्छी तरह घर संभालने में ही लिया जाता था। पर आज महिलाओं ने साबित कर दिया है कि वो केवल पुरुषों के बराबर ही नही बल्कि पुरुषों से भी आगे हैं। जो घर संभालने के साथ-साथ बाहरी दुनियां में भी अपना नाम कमा रही है। सरकार को भी महिलाओं के वास्तविक विकास के लिए उन्हे पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में जाना चाहिए और वहां की महिलाओं को सरकार की तरफ से मिलने वाली सुविधाओं तथा उनके अधिकारों से अवगत कराना होगा जिससे उनका भविष्य बेहतर हो सके। महिला सशक्तिकरण के सपने को सच करने के लिए लड़कियों के महत्व और उनकी शिक्षा को प्रचारित करने की जरुरत है।

राजन खन्ना
प्रोजैक्ट सर्विस स्पोर्ट

पॉलिथीन का नुकसान

पॉलिथीन पेट्रोलियम और प्रकृतिक गैसों से बनाया जाता है पॉलिथीन हमारे पर्यावरण के लिए बहुत नुकसानदायक है क्योंकि इसे विघटित करना बहुत मुश्किल है, यदि इसे जलाकर खत्म करने की कोशिश की जाए तो इससे हवा में कार्बनडाईऑक्सइड की मात्रा बढ़ जाती है, यदि इसे धरती पर बिना जलाए ही छोड़ दिया जाए तो इसे गलने में सैंकड़ों वर्ष का समय लग जाएगा।

आज पॉलिथीन से बनी चीज़ों का इस्तेमाल हमारी रोज़ाना की जिंदगी का हिस्सा बन गया है इसका प्रयोग बाजार से लेकर रसोई तक किया जा रहा है ये तो सत्य है कि पॉलिथीन गरीब वर्ग के लोगों के लिए सबसे सुविधाजनक और सस्ता साधन है किन्तु दूसरी तरफ देखा जाए ये मानव जाति और पर्यावरण के लिए खतरा साबित हो रहा है।

पॉलिथीन से बनी चीज़ें कभी नहीं सड़ती चाहे इसे जमीन के अंदर क्यों न दफन कर दिया जाए ये जैसे का तैसा ही रहेगा। पॉलिथीन प्रकृति रूप से कभी नहीं सड़ता, जलाये बिना भी पॉलिथीन लगातार खतरनाक गैसों का उत्सर्जन कर हवा को दूषित कर देता है, यही कारण है कि आम आदमी की तुलना में पॉलिथीन फैक्टरी में काम करने वालों को कैंसर होने का खतरा 80 फीसदी ज्यादा होता है। पॉलिथीन से बनी गैसें जानलेवा तो होती ही हैं साथ ही साथ ये ओजोन परत को भी नुक्सान पहुंचाती हैं जिस कारण सूर्य की खतरनाक किरणें धरती तक पहुंच रहीं हैं। पूरी दुनिया के लिए खतरा बन चुके ग्लोबल वार्मिंग का बड़ा कारण पॉलिथीन भी है।

पॉलिथीन हमारी नदी , नाले और समुन्द्रों को ज़हरीला बनाता जा रहा है। भारत की पवित्र नदी गंगा और यमुना के किनारे कई जगहों पर पॉलिथीन की परत चढ़ गयी है। इनके जल में बड़ी संख्या में फेंके गए पॉलिथीन जल को लगातार प्रदूषित करते जा रहे हैं। इसके साथ ही प्रकृति का वाष्पीकरण भी रुक जाता है यानि के पानी भाफ़ बनकर उड़ना बंद हो जाता है जिससे बादल नहीं बनते और यदि बादल नहीं बनेंगे तो बारिश नहीं होगी।

पॉलिथीन को सड़ने में हज़ार वर्षों का समय लग जाता है, उपयोग के बाद इसी पॉलिथीन को यहां -वहां फेंक दिया जाता है यह जमीन की उपजाऊ शक्ति को कम कर

देता है। एक अध्ययन के अनुसार अगर खेतों में पॉलिथीन को डंप किया जाये तो यह एक साल के अंदर जमीन की उपजाऊ शक्ति को कम कर देता है यानि के जमीन पूरी तरह बंजर हो जाती है। पहाड़ी इलाकों में भूस्खलन की सबसे बड़ी वजह पॉलिथीन ही है जमीन में डंप होकर पॉलिथीन मिट्टी को भुरभुरी बना देता है, जिससे जमीन धसने लगती है, लैंड फिलिंग में पॉलिथीन का उपयोग होने के कारण समूचा भवन ही धस जाने के उदाहरण मिलते हैं।

पॉलिथीन पेड़ पौधों के लिए घातक है जमीन पर पड़ा पॉलिथीन पेड़ -पौधों को पोषक तत्व लेने से रोकता है जिससे पौधों को जरूरी आहार नहीं मिल पाता और कुछ दिनों के पश्चात पौधा सूखने लगता है। एक अध्ययन के अनुसार 20 किलोग्राम पॉलिथीन केवल छः महीने से भी कम समय में 50 वर्ष पुराने बरगद के पेड़ को भी नाश करने की ताकत रखता है।

पॉलिथीन में खाद्य सामग्रियाँ भरकर फ्रिज में रखना काफी खतरनाक होता है क्योंकि इससे लगातार पैदा होने वाली गैसें फ्रिज में रखी अन्य खाद्य समग्रियों को भी नुकसान पहुंचाती हैं और इन पदार्थों को खाने से दस्त , उल्टी और पेट में दर्द की शिकायत हो सकती है। काला और गुलाबी रंग के पॉलिथीन का प्रयोग आम पॉलिथीन की तुलना में 2 गुना ज्यादा खतरनाक है। काला और गुलाबी पॉलिथीन इस्तेमाल कर फेंके गए पॉलिथीन बैग्स को रीसायकल कर बनाया जाता है।

पॉलिथीन पर पाबंदी से प्रकृति को प्रदूषित होने से बचाया जा सकता है इसका इस्तेमाल बंद होने से रोजगार के नए द्वारा खुलेंगे एक और यहाँ चंद मजदूर और कुछ मशीने मिलकर पॉलिथीन तैयार कर देती हैं वहीं पॉलिथीन का विकल्प तैयार करने में बहुत सारे लोगों को आवश्यकता पड़ेगी, स्वरोजगार शुरू करने के अवसर भी लोगों को मिलेंगे, पॉलिथीन पर रोक लगाने से घर में बैठकर तैयार किये जाने वाले साधारण से कागज के लिफ़ाफे तक को बड़ा बाजार दिया जा सकता है।

अनिल कुमार
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी

ओलम्पियाड परीक्षाओं का महत्व

ओलम्पियाड परीक्षाएं एक प्रतियोगी परीक्षाएं हैं जो छात्रों में संभावित, प्रतिभा,और योग्यता को बढ़ाते हैं। यह परीक्षाएं कक्षा एक से बारहवीं तक के छात्रों के लिए आयोजित की जाती हैं। यह परीक्षाएं देश स्तर या राज्य स्तर पर होती हैं। कई माता-पिता और छात्र ओलपियाड परीक्षाओं को स्कूल पढ़ाई से अतिरिक्त रुप में और बोझ समझते हैं। और वे बच्चों को इन परीक्षाओं में भाग भी नहीं लेने देते।

लेकिन इन परीक्षाओं में भाग लेने से छात्रों को अत्याधिक ज्ञान होता है। इन परीक्षाओं की तैयारी करने से छात्रों को अपने विषय के बारे में और अधिक जानकारी मिलती है जिससे उसे आखिरी परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने में मदद मिलती है इन परीक्षाओं में भाग लेने पर हो सकता है कि कुछ छात्रों को मुश्किलें आए परन्तु कुछ समय बाद यह स्कूल परीक्षा जैसा ही लगने लगता है। परीक्षाओं में भाग लेने से छात्रों का मनोबल बढ़ता है और छात्रों को भविष्य में देने वाली प्रतियोगी परीक्षाओं को आसानी से पास करने में भी मदद मिल जाती है।

मैं इन परीक्षाओं को इतना अधिक महत्व दे रही हूं क्योंकि इन परीक्षाओं से मैंने अपने जीवन में कई छात्रों को अपने भविष्य में उन्नति की ओर बढ़ते देखा है। मेरी बेटी चौथी कक्षा में है। मैं उसे दूसरी कक्षा से ही ओलंपियड परीक्षाओं में भाग दिलवा रही हूं। शुरुआत में इन परीक्षाओं की तैयारी करने में कुछ मुश्किलें आई थी पर अब वो अपनी इच्छा से इन परीक्षाओं में भाग लेती है। अब इन परिक्षाओं में भाग लेने से मेरी बेटी महज कौर को कोई अतिरिक्त बोझ नही लगता बल्कि वह मन लगाकर पढ़ाई करती है और पर परीक्षा में भाग लेती है। इनकी तैयारी करने से उसे अपने विषय में अधिक जानकारी मिलती है। इससे उसे अपने स्कूल की परीक्षा में और बेहतर प्रदर्शन करने में प्रेरणा मिलती है दूसरी कक्षा में मेरी बेटी ने अच्छे अंक लेकर सिलवर मेडल प्राप्त किया था। तृतीय कक्षा में भी उसने इन परीक्षाओं की अच्छे से तैयारी की और एक विषय में उसे गोल्ड मेडल भी प्राप्त हुआ।

इसलिए मैं सभी के माता-पिता को यही सलाह दूंगी कि अपने बच्चों को हर बार ओलंपियाड परीक्षाओं में हिस्सा दिलवाए। ताकि उनमें आत्मविश्वास बढ़े और पढ़ाई में भी रुचि बनी रहे।

सरबजीत कौर
परियोजना सहयोगी

नारी

नारी. त्याग की वो मूरत है।
ममता की वो सूरत है।
फिर भी पूछी जाती है,
क्या वाकई इस घर को तुम्हारी जरूरत है।
करती क्या हो तुम घर में,
मजें लूटती हो बस हर पल में,
न समझ तुमकों रिश्तों की,
न ही कर्त्तव्यों का कुछ ज्ञान,
बताओ मुझे क्या है, तुम्हारा यहाँ काम।
एक अट्हास में बोली वह मूरत,
सही कहा जी, नही मुझे कोई ज्ञान
मूर्ख हूँ, अज्ञानी हूँ तभी तो
रिश्तें प्यारें छोड़ कर अंजानों
में जगह बनाने आयी हूँ।
अपने मां-बाप छोड़ कर दूसरों
को सर-आँखों बैठाने आयी हूँ।
और तो और अपनी कोख देकर
किसी और का वंश बढ़ाने आयी हूँ।
सही कहा अज्ञानी हूँ, मूर्ख हूँ।
तभी तो आस्तित्व अपना तुम पर
अकारण न्यौछावर करने आयी हूँ।
क्या करूं नारी हूँ, मूर्ख हूँ, अज्ञानी हूँ।

अंजलि
एम.टेक द्वितीय वर्ष

प्रशासनिक शब्दावली

Earned Leave	अर्जित छुट्टी	Half pay leave	अर्ध वेतन
Editorial	सम्पादकीय	Headquarter allowance	मुख्यालय भत्ता
Effective date	प्रभावी तिथि	Hindi teaching scheme	हिंदी शिक्षण योजना
Employment notice	रोज़गार सूचना	Honorarium	मानदेय
Endorsed cheque	पृष्ठांकित चैक	Horizontal filing system	अनुप्रस्थ फ़ाइल पद्धति
Enquiry Office	पूछताछ कार्यालय	Hospitality allowance	सत्कार भत्ता
Enrolment	नामांकन	Identification mark	पहचान-चिहन
Excise duty	उत्पाद शुल्क	Identity certificate	पहचान प्रमाणपत्र
Executive authority	कार्यपालक प्राधिकारी	Illegal gratification	अवैध परितोषण
Face value	अंकित मूल्य	Incentive scheme	प्रोत्साहन योजना
Family allowance	परिवार भत्ता	Incidental charges	प्रासंगिक प्रभार
Finance act	वित्त अधिनियम	Income tax return	आयकर विवरणी
Finance bill	वित्त विधेयक	Incomplete application	अपूर्ण आवेदनपत्र
Financial administration	वित्तीय प्रशासन	Incriminating document	अपराध संकेती दस्तावेज़
Financial certificate	वित्तीय प्रमाण-पत्र	Job descriotion	कार्य विवरण
Financial obligation	वित्तीय दायित्व	Job evaluation	कार्य मूल्यांकन
Follow-up action	अनुवर्ती कार्रवाई	Joining date	कार्यग्रहण तारीख
Forwarding letter	अग्रेषण पत्र	Joint attestation	संयुक्त अनुप्रमाणन
Fundamental rules	मूल नियमावली	Joint liability	संयुक्त दायित्व
Gazetted officer	राजपत्रित अधिकारी	Joint responsibility	संयुक्त उत्तरदायित्व
Gazette notification	राजपत्र-अधिसूचना	Judicial enquiry	न्यायिक जाँच
General administration	सामान्य प्रशासन	Junior administrative grade	अवर प्रशासन-कोटि
General Circular	सामान्य परिपत्र	Keynote address	आधार व्याख्यान
General comment	सामान्य टिप्पणी	Labour organization	श्रम संगठन
General section	सामान्य अनुभाग	Last pay certificate	अंतिम वेतन प्रमाण
General comment	सामान्य टिप्पणी	Land use certificate	भूमि उपयोग प्रमाण पत्र
General instructions	सामान्य अनुदेश	Leading article	अग्रलेख

सुषमा कौशल, प्रोजैक्ट सर्विस सपोर्ट

हिन्दी
पखवाड़ा

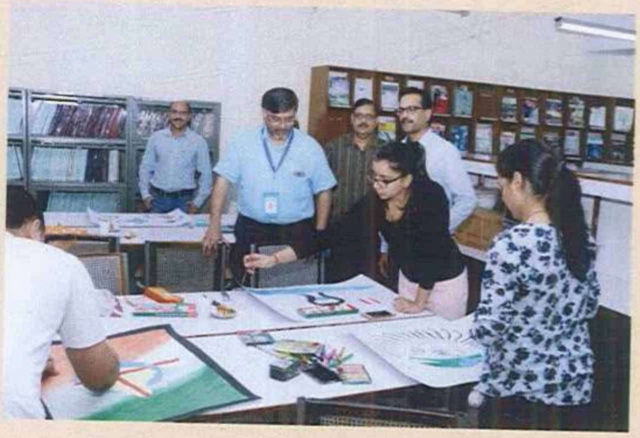

हिन्दी
पखवाड़ा

देवनागरी एक लिपि है जिसमें अनेक भारतीय भाषाएँ तथा कुछ विदेशी भाषाएं लिखीं जाती हैं। संस्कृत, पालि, हिन्दी, मराठी, कोंकणी, सिन्धी, कश्मीरी, नेपाली, तामाङ भाषा, गढ़वाली, बोडो, अंगिका, मगही, भोजपुरी, मैथिली, संथाली आदि भाषाएँ देवनागरी में लिखी जाती हैं। इसके अतिरिक्त कुछ स्थितियों में गुजराती, पंजाबी, बिष्णुपुरिया मणिपुरी, रोमानी और उर्दू भाषाएं भी देवनागरी में लिखी जाती हैं।

अधितकतर भाषाओं की तरह देवनागरी भी बायें से दायें लिखी जाती है। प्रत्येक शब्द के ऊपर एक रेखा खिंची होती है (कुछ वर्णों के ऊपर रेखा नहीं होती है) इसे शिरोरेखा कहते हैं। इसका विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ है। यह एक ध्वन्यात्मक लिपि है जो प्रचलित लिपियों (रोमन, अरबी, चीनी आदि) में सबसे अधिक वैज्ञानिक है। इससे वैज्ञानिक और व्यापक लिपि शायद केवल आइपीए लिपि है। भारत की कई लिपियाँ देवनागरी से बहुत अधिक मिलती–जुलती हैं, जैसे– बांग्ला, गुजराती, गुरुमुखी आदि। कम्प्यूटर प्रोग्रामों की सहायता से भारतीय लिपियों को परस्पर परिवर्तन बहुत आसान हो गया है।

भारतीय भाषाओं के किसी भी शब्द या ध्वनि को देवनागरी लिपि में ज्यों का त्यों लिखा जा सकता है और फिर लिखे पाठ को लगभग 'हू–ब–हू' उच्चारण किया जा सकता है, जो कि रोमन लिपि और अन्य कई लिपियों में सम्भव नहीं है, जब तक कि उनका कोई खास मानकीकरण न किया जाये, जैसे आइट्रांस या आइएएसटी।

इसमें कुल ५२ अक्षर हैं, जिसमें १४ स्वर और ३८ व्यंजन हैं। अक्षरों की क्रम व्यवस्था (विन्यास) भी बहुत ही वैज्ञानिक है। स्वर–व्यंजन, कोमल–कठोर, अल्पप्राण–महाप्राण, अनुनासिक्य–अन्तस्थ–उष्म इत्यादि वर्गीकरण भी वैज्ञानिक हैं। एक मत के अनुसार देवनगर (काशी) मे प्रचलन के कारण इसका नाम देवनागरी पड़ा।

भारत तथा एशिया की अनेक लिपियों के संकेत देवनागरी से अलग हैं (उर्दू को छोडकर), पर उच्चारण व वर्ण–क्रम आदि देवनागरी के ही समान हैं – क्योंकि वो सभी ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न हुई हैं। इसलिए इन लिपियों को परस्पर आसानी से लिप्यन्तरित किया जा सकता है। देवनागरी लेखन की दृष्टि से सरल, सौन्दर्य की दृष्टि से सुन्दर और वाचन की दृष्टि से सुपाठ्य है।

देवनागरी लिपि के अनन्य गुण :

१) एक ध्वनि : एक सांकेतिक चिन्ह, एक सांकेतिक चिन्ह : एक ध्वनि
२) स्वर और व्यंजन में तर्कसंगत एवं वैज्ञानिक क्रम–विन्यास
३) वर्णों की पूर्णता एवं सम्पन्नता (५२ वर्ण , न बहुत अधिक न बहुत कम)
४) उच्चारण और लेखन में एकरुपता
५) उच्चारण स्पष्टता (कहीं कोइ संदेह नही)
६) लेखन और मुद्रण मे एकरूपता (रोमन , अरबी और फारसी मे हस्त्लिखित और मुद्रित रूप अलग–अलग हैं)
७) देवनागरी लिपि सर्वाधिक ध्वनि चिन्हों को व्यक्त करती है ।
८) लिपि चिन्हों के नाम और ध्वनि मे कोई अन्तर नहीं (जैसे रोमन में अक्षर का नाम "बी" है और ध्वनि "ब" है)
९) मात्राओं का प्रयोग, अर्ध अक्षर के रूप की सुगमता

सी-डैक
CDAC

प्रगत संगणन विकास केंद्र (सी–डैक)
इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की वैज्ञानिक संस्था, भारत सरकार
ए–34,औद्योगिक क्षेत्र, फेज–8 मोहाली–160071
टेलीफोन नंबर 0172–2237052–55 फैक्स नंबर 0172–2237050

CENTRE FOR DEVELOPMENT OF ADVANCED COMPUTING
A Scientific Society of the Ministry of Communications & Information Technology, Govt. of India
A-34, Phase VIII, Industrial Area, Mohali - 160 071, (near Chandigarh) Punjab, INDIA
Phone: +91-172-2237052-55 Fax: +91-172-2237050

कवर डिजाइन : सी–डैक मोहाली